International Journal of Information Movement Vol.5 Issue X (February 2021)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 18-22

# हिन्दी हमारा गर्व और गौरव

**डॉ॰ ऋषिपाल**,
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिन्दी–विभाग,
बाबू अनन्त राम जनता महाविद्यालय,
कौल, कैथल (हरियाणा) – 136021
**Email:** rishipalsuman@gmail.co

हिन्दी विश्व पटल पर अपनी लोकप्रियता बढ़ा कर आज हमें गर्व और गौरव की अनुभूति करवा रही है। विश्व–भाषा उस भाषा को कहते हैं जिसका प्रयोग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होता है। हिन्दी को अनिवासी भारतीय वर्तमान में स्वतः बोलने और सीखने में रुचि लेने लगे हैं। हम गर्व से कह सकते हैं कि विगत दस वर्षों में हिन्दी बोलने, पढ़ने और सीखने वालों की पचास प्रतिशत की वृद्धि हुई है। भारत देश के बढ़ते कदम और बाजार के विस्तार को देखते हुए अनिवासी भारतीय अपनी आने वाली पीढ़ी को भी हिन्दी सीखने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित कर रहे हैं ताकि वो भविष्य में भारत देश में निवेश कर सकते हैं। वर्तमान में मनोरंजन के क्षेत्र में हिन्दी सर्वाधिक लाभ प्राप्त करके प्रथम भाषा बन गई है क्योंकि विज्ञापनों का कुल कार्य 75 प्रतिशत हिन्दी के माध्यम में है। भले ही आज चीनी भाषा सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली जाती हो, लेकिन बहुत तेजी से हिन्दी चीनी भाषा का स्थान प्राप्त कर लेगी। संसार में भारतीय चाहे तमिलनाडु के हों, केरला या उड़ीसा के हों या फिर किसी अन्य राज्यों के हों, जब कभी मिलते हैं तो इनकी बोलचाल की भाषा हिन्दी ही होती है। सुखद अनुभूति, गर्व एवं गौरव की बात है कि विदेशों में व्यापक स्तर पर हिन्दी के पठन–पाठन का प्रचलन जोर पकड़ने लगा है। सिंगापुर में हिन्दी सोसायटी द्वारा कुल सात हिन्दी प्रशिक्षण केन्द्र चलाये जा रहे हैं। सन् 1990 से लेकर आज तक इस संस्था ने 2100 से अधिक विद्यार्थियों को सफल प्रशिक्षण देकर लाभान्वित किया है। लगभग 54 स्कूलों में समानान्तर हिन्दी के कार्यक्रम चलते हैं। खुशी इस बात की है कि ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया प्रांत की सरकार ने देश की केन्द्र सरकार से हिन्दी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में शामिल करने की सिफारिश की है। विक्टोरियन सरकार ने राष्ट्रीय पाठ्यक्रम अधिकारियों से हिन्दी को पाठ्यक्रम में शामिल करने की हिदायत दी है। राज्य सरकार ने अपने पत्राचार में कहा है कि हिन्दी देश में सबसे ज्यादा सम्पर्क की भाषा बन चुकी है। हम सभी भारतवासियों के लिए गर्व की बात है कि विगत दस वर्षों में हिन्दी ने 100 प्रतिशत से अधिक गति में अपनी पहचान व छाप छोड़ी है।

हिन्दी हमारी मातृभाषा है। हिन्दी हमारी संस्कृति तथा हमारी अस्मिता की सूचक है। ''हिन्दी' शब्द का सम्बन्ध संस्कृत के सिंधु से जोड़ा गया है। डॉ॰ भोलानाथ तिवारी का मत है कि ''सिन्धु शब्द संस्कृत की अपेक्षा किसी द्रविड़ भाषा या उसकी पूर्ववर्ती भाषा से सम्बन्धित है।'' वहां से यह शब्द संस्कृत में आया है। इसी कारण उसके आस–पास की भूमि भी सिन्धु

कहलाने लगी।''[1] भारत ही वह देश है जहां विश्व की पहली पुस्तक 'ऋग्वेद' का प्रणयन हुआ एवं विश्व को **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** का सन्देश दिया। हिन्दी संस्कृति की पुत्री है –

**''जननी संस्कृत भाषा चास्या सार्वभौम–संस्कृति सम्पन्ना।**
**मन्साकाशानान्या भाषा धन्या हिन्दी भाषा।।''**[2]

हिन्दी एकता के सूत्र में बांधने वाली भाषा है –

**विश्वव्यापिनी सम्प्रति हिन्दी राष्ट्रभाषा पदमलंकृता।**
**सदा एकता गानं गायति सुखदा वरदा हिन्दी भाषा।।''**[3]

हिन्दी का प्रत्येक अक्षर वैज्ञानिक है। हिन्दी में छोटे–बड़े अक्षरों की भी समस्या है। ''आंग्ल शब्दकोश की संख्या पांच लाख से अधिक नहीं है जबकि हिन्दी का शब्दकोश अधिक सम्पन्न है जिसमें शब्दों की संख्या सताईस लाख बीस हजार है। हिन्दी में एक धातु से कम से कम दौ सो से अधिक शब्द बन सकते हैं। कश्मीर से कन्याकुमारी तक रचनाकारों ने रचनाओं का प्रणयन कर हिन्दी साहित्य को सम्पन्न बनाया है। यह भी सच है कि उत्तर भारत ने अवतार दिये तथा दक्षिण भारत ने आचार्य दिए हैं। खाड़ी नोवी के आरम्भिक ग्रंथों का निर्माण कर्नाटक में हुआ।''[4]

वैसे तो हमारी संस्कृति में **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** वर्षों से रचा–बसा है लेकिन वैश्वीकरण या भूमण्डलीकरण से प्रभावित होकर भारतीय विज्ञापन ने वर्तमान में जो जोर पकड़ा, वह काबिलेतारीफ है – **'कर लो दुनिया मुट्ठी में।'** विज्ञान के यन्त्रों–तन्त्रों से विदेशों में कथा साहित्य, यात्रा वृतांत फिल्मों, गीतों से कब देश जैसी अनुभूति होने लगी इस बात का पता भी नहीं चला। कुछ वर्ष पूर्व रोजगार की तलाश में विदेश यात्राएं शापिंग एवं भ्रमण के रूप में जीवन का अभिन्न अंग बन गई इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं। विज्ञान और तकनीक ने वर्षों से मनमोहक प्रिय गीत –

**'मेरे पिया गए रंगून,**
**किया है वहां से टेलिफून,**
**कि तेरी याद सताती है'**

को आम आदमी के जीवन में अलग–अलग राग–रागनियों के साथ भर दिया। या यूँ कहें कि प्रत्येक प्रकार की दूरियाँ नजदीकियों में बदल गईं, इसका पता भी नहीं चला। विगत बीस वर्षों से अलग–अलग भाषाओं का संघर्ष चल रहा है। भूमण्डलीकरण और वैश्वीकरण के कदम जैसे–जैसे विस्तार पर रहे हैं, वैसे–वैसे भाषा का मसला भी अपनी गहराईयों का विश्लेषण करते हुए अपने निखार को बढ़ा रहा है। हिन्दी के कदम तो विश्व पटत पर लगातार आगे बढ़ रहे हैं। खुशी, गर्व और गौरव की अनुभूति भी है कि हिन्दी ने अनेक प्रकार की छाप स्वाभाविक छोड़ कर दुनिया को बरबस अपनी ओर खींच लिया है।

हिन्दी भारतीय संस्कृति की संवाहक है। भाषा जातीयता, राष्ट्रीयता और सामाजिकता से संपृक्त होती है। भाषा और संस्कृति का अटूट सम्बन्ध होता है। मैडलवान नामक विद्वान ने लिखा है कि ''प्रत्येक संस्कृति का सार तत्त्व उसकी भाषा में ही अभिव्यक्ति पा सकता है। इसलिए यदि ऐसा कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा कि यदि भाषा के बिना संस्कृति पंगु है तो संस्कृति के बिना भाषा अंधी है।''[5] संस्कृति उस समाज की पहचान होती है। ''अनुसंधानों

से पता चलता है कि संसार की आरम्भिक भाषा वैदिक भाषा है। ऋग्वेद, अथर्ववेद, सामवेद और वेदों की रचनाएँ इसी भाषा में निबद्ध हैं। इस भाषा का भौगोलिक क्षेत्र ब्रह्मवर्त, जम्बूदीप कहलाया। यही एशिया का महाद्वीप भारत है। भारत को हिन्द और हिन्दुस्तान ये नाम विदेशियों ने दिये।''[6] डॉ॰ भोलानाथ तिवारी लिखते हैं – ''प्राचीन ईरानी साहित्य में 'हिन्दी' शब्द 'सिन्ध' सिन्ध नदी के आस–पास के प्रदेश तथा हिन्दू शब्द 'सिन्धू' नदी के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। सिन्ध, सिन्धु तथा ससासिन्ध आदि शब्द अवेस्ता में हिन्द, हिन्दु और हफा हिन्दव के रूप में मिलते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि प्राचीन भारतीय अभिभाषा की 'स' ध्वनि प्राचीन ईरानी भाषा में ह के रूप में उच्चारित होती है।''[7] वर्तमान हिन्दी विश्व की चहेती भाषा बन गई है। विदेशी नागरिक यह बात भली प्रकार से समझ चुके हैं कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा बाजार है। यदि उन्हें हमारी आवश्यकता है, वो हमसे व्यावसायिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं तो उन्हें हिन्दी को स्वीकार करना ही पड़ेगा। डॉ॰ जयन्त जी प्रसाद नौटियाल का निष्कर्ष है कि, ''भारत की राजभाषा हिन्दी विश्व में पहले स्थान पर है तथा चीनी दूसरे स्थान पर है।''[8] प्रो॰ सैम्युअल हंटिगटन के मन से ''विश्व में अंग्रेजी के प्रयोक्ताओं की संख्या घट रही है। सन् 1958 में अंग्रेजी प्रयोक्ताओं का प्रतिशत विश्व में 9.8 था। 1997 में घटर कर 7.6 प्रतिशत हो गया।''[9]

प्रवासी भारतीयों व संसार में फैले विभिन्न संगठनों ने भी हिन्दी के प्रचार–प्रसार में महत्ती भूमिका का निर्वहन किया। हिन्दी राष्ट्रभाषा भी है, राजभाषा भी है लेकिन उससे भी गर्व की बात यह है कि वह जन भाषा है। हिन्दी का प्रयोग न केवल भारत में बल्कि संसार के अनेक देशों में एक सशक्त भाषा के रूप में हो रहा है। भारत देश में भले ही युवा पीढ़ी पर अंग्रेजी का भूत सवार हो लेकिन अनिवासी भारतीय युवा हिन्दी सीख रहे हैं। ''आज हिन्दी भारत ही नहीं बल्कि पाकिस्तान, नेपाल, बंगलादेश, ईराक, इण्डोनेशिया, इजरायल, ओमान, फिजी, इक्वाडोर, जर्मनी, अमेरिका, फ्रांस, ग्रीस, ग्वाटेमाला, सऊदीअरब, पेरू, रूस, कातर, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड, म्यामांर त्रिनिदाद–टोबैगो, यमन आदि देशों में जहां लाखों अनिवासी भारतीय व हिन्दी भाषी हैं में भी बोली जाती है। अनेकों देशों में 'गिरमिटिया' के रूप में गये भारतीय अपनी संस्कृति व हिन्दी को सहेजना चाह रहे हैं। विदेशी विश्वविद्यालय ने इसे एक विषय के रूप में अपनाया है। विदेशों में आज 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। अकेले अमेरिका में 32 विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों में हिन्दी की पढ़ाई होती है''[10]

हिन्दी विकसित एवं समर्थ भाषा है। इसमें अभिव्यक्ति की विलक्षण सुविधा है। फादर कामिल बुल्के हिन्दी के बारे में कहते हैं कि – ''हिन्दी सबसे अधिक सुस्पष्ट, समृद्ध और सरल तथा सुबोध है। इसमें असंख्य मुहावरे और लोकोक्तियाँ हैं, जो अत्यन्त रोचक हैं। इसकी लिखाई और उच्चारण में आश्चर्यजनक अनुरूपता है। इसका शब्द भण्डार विपुल है। हिन्दी अपनी ढेर सी सहायक क्रियाओं की सहायता से सूक्ष्म, जटिल और अत्यन्त परिष्कृत आधुनिकतम विचार भी पूर्णतः व्यक्त कर सकती है।''[11] यह सच है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कार्यालयों में अभी भी अंग्रेजी का बोलबाला है। ''मगर सच्चाई यह भी है कि उन्हें अपने उत्पादकों को जन सामान्य तक पहुंचाने के लिए हिन्दी का सहारा लेना पड़ रहा है। आज हिन्दी को अपनाना बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की विवशता है और यही विवशता हिन्दी की शक्ति

एवं सामर्थ्य की द्योतक है।''[12] ''बाजार से अभिप्राय उस स्थान से है, जहां क्रेता और विक्रेता किसी वस्तु विशेष को खरीदने और बेचने के लिए मिलते हैं। बाजार स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय अथवा वैश्विक भी हो सकता है।''[13] ''इक्कीसवीं सदी में साम्राज्यवाद का बोलबाला है और कच्चे माल की प्राप्ति तथा तैयार माल की खपत, स्तरीय माल का निर्माण ही किसी देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करता है।''[14]

हिन्दी का राष्ट्रीय आन्दोलन के समय भारत देश को आजाद कराने में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। अनेक कवि एवं लेखकों ने राष्ट्र प्रेम से परिपूर्ण रचनाओं के माध्यम से देशवासियों को स्वतन्त्रता संग्राम के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया। ''हिन्दी ने भारत राष्ट्र को एक करने में अपनी अहम् भूमिका निभाई है। इसलिए संविधान निर्माताओं ने इसे सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया है।''[15] हिन्दी के बारे में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि ''राष्ट्रीय एकता के लिए यदि कोई भाषा समर्थ भूमिका निभा सकती है तो वह केवल हिन्दी भाषा ही है, क्योंकि अत्याधिक सरल एवं सहजता से बोली व समझी जाने वाली बोलचाल की भाषा है, जिसमें बहुत बड़ी मात्रा में साहित्य रचा जा रहा है।''[16] प्रसिद्ध कवि त्रिलोचन ने हिन्दी के बारे में ठीक कहा है –

**भाषा की लहरों में, जीवन की हलचल है,**
**ध्वनि में क्रिया भरी है, और क्रिया में बल है।''**[17]

वैश्वीकरण एवं बाजारवादी संस्कृति के काल में सूचना एवं प्रौद्योगिकी के आपसी सम्बन्धों में तालमेल के बगैर हिन्दी के आगे बढ़ने की सम्भावनाएँ क्षीण हो सकती हैं। यह हर्ष एवं प्रशंसनीय बात है कि बहुत सी चुनौतियों के बाद भी हिन्दी ने प्रौद्योगिकी के जगत में अपने पावं जमाये हैं। इस प्रयोजन में विदेशों में बसे भारतीय और हिन्दी प्रेमी, भारत सरकार, प्रशासन, व्यवस्था में प्रौद्योगिकी से सम्बन्ध या समझ रखने वाले बहुत कम लोग, सभी हिन्दी प्रेमीजन नमन के पात्र हैं। प्रमुख सर्च इंजन गूगल के प्रमुख एरिक श्मिट का मानना है कि ''अगले पांच वर्षों में हिन्दी इंटरनेट पर छा जायेगी और अंग्रेजी भाषा व चीनी भाषा के साथ हिन्दी भाषा इंटरनेट की दुनिया में प्रमुख भाषा होगी। हिन्दी के प्रयोग के लिए भारतीय सेना की भूमिका की चर्चा न हो, शायद यह ठीक नहीं। भारतीय सेनाओं में लाखों की संख्या में जवान अपने देश के लिए सेवाएँ दे रहे हैं जो विभिन्न राज्यों के भाषा–भाषी क्षेत्रों से सम्बन्ध रखते हैं। हमारे देश में सैनिकों की असंख्य छावनियाँ बनी हुई हैं। वहां आम सैनिकों के आपसी व्यवहार की भाषा हिन्दी है। सैनिकों के प्रशिक्षण की भाषा हिन्दी है, उन्हें आदेश, निर्देश भी हिन्दी में ही दिए जाते हैं। भारतीय सेनाओं में सभी सैनिक अपना मनोरंजन हिन्दी फिल्मों, गीतों व भजनों से करते हैं। उनका देश के साथ व जनता के साथ आपसी व्यवहार भी हिन्दी भाषा में ही होता है।

सारांशतः हम कह सकते हैं कि भूमण्डलीकरण, वैश्वीकरण एवं बाजारवादी संस्कृति के युग में संसार के अनेकों देशों में हिन्दी के प्रति रुचि बढ़ रही है। निःसन्देह संसार के एक विशाल समूह द्वारा बोली, पढ़ी, समझी व व्यवहार में लाने वाली हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा होनी चाहिए। हिन्दी में वे सभी गुण समाहित हैं जो संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने के लिए चाहिए। हिन्दी संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र देश की भाषा है। हिन्दी साहित्य, भाषा और विज्ञान की दृष्टि से भी उन्नत और विकसित भाषा है। निश्चित ही वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दी

विश्व पटल पर रोजगार और व्यवसाय का सफल माध्यम बन चुकी है। अब समय आ गया है कि हिन्दी राष्ट्र भाषा बने। राष्ट्रभाषा के रूप में उसका सम्मान हो। राष्ट्र भाषा के सम्मान में हम सभी हिन्दी बोलें, पढ़े, स्वाभिमान से हिन्दी के साथ जीयें। आओ हम संकल्प लें कि हिन्दी को नैतिक रूप से, व्यवहारिक रूप से, संवैधानिक रूप से अपनी दिनचर्या में शामिल करके मातृभाषा का सम्मान करें।

## संदर्भ....

1.डॉ॰ ईश्वरी चन्द्रशेखर, विश्व पटल पर हिन्दी, पृ॰ 279 (सम्पादन महेश दिवाकर)
2. कान्यामृत, (श्लोक संग्रह), महाश्वेता चतुर्वेदी
3. वही
4. डॉ॰ महाश्वेता चतुर्वेदी, विश्व पटल पर हिन्दी, पृ॰ 256 (सम्पादन, महेश दिवाकर)
5. वैचारिकी, सितम्बर–अक्टूबर, 2014, पृ॰ 5
6. प्रो॰ सुरेश माहेश्वरी, विश्व पटल पर हिन्दी, पृ॰ 315 (सम्पादन, महेश दिवाकर)
7. राष्ट्रभाषा से विश्व भाषा की ओर, डॉ॰ सुरेश माहेश्वरी, पृ॰ 31
8. भाषा विज्ञान, प्रवेश एवं हिन्दी भाषा, डॉ॰ भोलानाथ तिवारी, पृ॰ 317
9. हिन्दी भाषा का आधुनिकीकरण, डॉ॰ कैलाश चन्द्र मारिया, पृ॰ 153
10. कृष्ण कुमार यादव, विश्व पटल पर हिन्दी, पृ॰ 264–265 (सम्पादन, महेश दिवाकर)
11. संचार बुलेटिन, वर्ष – 01, अंक – 01, सितम्बर 2009
12. सं॰ डॉ॰ सूर्यदीन यादव, साहित्य परिवार अंक–10, पृ॰ 48
13. टी॰ आर॰ जैन, व्यष्टि अर्थशास्त्र, पृ॰ 87
14. डॉ॰ अमर सिंह वधान, इक्कीसवीं सदी से संवाद, पृ॰ 74
15. महिपाल सिंह, विश्व बाजार में हिन्दी, पृ॰ 36
16. वही, पृ॰ 36
17. वही, पृ॰ 36